स्वामी विवेकानंदजी की विचारधारा का समाजशास्त्र तथा इतिहास पर प्रभाव

डॉ. ओमप्रकाश ब. झंवर
स्वा. सावरकर महाविद्यालय, बीड.

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन मे अपने जोशीले व्याख्यानों तथा लेखों से जान फूंकने तथा भारत के अध्यात्मिक नेतृत्व को विश्व पटल पर पुर्नस्थापित करने वाले युग-पुरूषों में स्वामी विवेकानंद एक ऐसे महापुरूष थे जिनके विचारों ने न केवल अपनी पीढी के लोगों को प्रभावित किया अपितु आने वाली कई पीढियों के लिए जीवन का एक सुस्पष्ट मार्ग खोल दिया। स्वामी दयानंद सरस्वती के पश्चात् स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारत के ऐसे महान् निर्माता, सन्यासी, विचारक तथा प्रचारक थे जिन्होंने स्वयं राजनिती में प्रत्यक्ष रूप से भाग नही लिया अपितु अपनी प्रतिभा से देशवासियों में स्वतंत्रता का दीपक जलाया, राष्ट्रीय गौरव के प्रति चेतना जागृत की एवं पाश्चात्य देशों में भारत की गौरवपूर्ण संस्कृति की धाक जमा दी। रवींद्र नाथ टैगोर ने उनके विचारों से प्रभावित होकर कहा – ''यदि कोई भारत को समझना चाहता है, तो उसे विवेकानंद को पढना चाहिए ।'' स्वामी विवेकानंद का जन्म १२ जनवरी १८६३ ई. को कलकत्ता के एक सुसंस्कृत कायस्थ परिवार में हुआ था।

भारत के तेज का पुंजीभूत रूप है– विवेकानंद। स्वामी विवेकानंद भारत के सम्भवतः पहले पुरूष हैं जिन्होंने पश्चिम के और विज्ञान के इस तरीके की खुलकर प्रशंसा की। उन्होंने स्वयं प्रयोग करके सच और झूठ का निर्णय करने की विज्ञान की विधी को धर्म के क्षेत्र में भी लागू किया। धर्म कहता है, ईश्वर है तो विवेकानंद सिर्फ इस कथन को पोथियों और पुराणों में पढकर नहीं रह गए बल्कि उन्होंने भक्ति की, योग किया, ज्ञानाभ्यास किया, निश्काम कर्माभ्यस किया और ईश्वरका प्रत्यक्ष अनुभव करने के बाद, उन्होंने सिंहनाद किया। धर्म विश्वास पात्र नहीं है, धर्म है साक्षात्कार।

कॉलेज के दिनों में उन्होंने भारतीय और अंग्रेज प्रोफेसरों का ध्यान अपनी और आकर्षित किया। प्रिंसिपल डब्लू, डब्लू, हेस्टी ने कहा, 'मैने सुदूर देशों का भ्रमण किया है पर अभी तक मुझे कभी भी ऐसा लडका नहीं मिला जिसमें नरेंद्र की प्रतिभा और सम्भावनाएँ हों। वह जीवन में अवश्य ही अपनी छाप छोड जाएगा।' नरेंद्र ने केवल पाठ्क्रम तक ही अपने अध्ययन को सीमित नहीं रखा बल्कि कॉलेज जीवन के प्रथम दो वर्षों में ही पाश्चात्य तर्कशास्त्र के समस्त प्रमाणिक ग्रंथों का पूरी तरह अध्ययन किया और शेष वर्षों में उन्होंने पाश्चात्य दर्शन तथा युरोप के विभिन्न राष्ट्रो के प्राचीन व अर्वाचीन इतिहास का अध्ययन किया।

एक दिन वे वेद पढा रहे थे कि बांग्ला भाषा के सुविख्यात नाटककार गिरीशचंद्र घोष वहाँ आए और बोले – नरेंद्र तुमने वेद, वेदान्त बहुत पढे हैं पर देश की जो आज दुरावस्था हे भूख और दूसरी बुराईयाँ समाज को खा रही हैं, क्या इनको दूर करने का उपाय किसी धर्म में मिलता है? नरेंद्र क्या कहते, वहाँ रूकना उनके लिए कठिन हो गया। समाज की जडता और दुख को दूर करने के समाधान के लिए उनका चित्त व्याकुल हो उठा। वे मार्ग खोजने लगे। अपनी शंकाओं के समाधान के लिए वे ब्रह्मसमाज में सम्मिलित हुए लेकिन समाधान न हुआ। उन्होंने केशव चन्द्रसेन तथ महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर के उपदेश सुने। परन्तु जिज्ञासा शांत न हुई।

नरेंद्र नाथ ने अपने कॉलेज के प्रिंसिपल विलियम हेस्टी से एक बार श्री रामकृष्ण का उल्लेख सुना था। प्रिंसिपल हेस्टी जब कक्षा में वड्र्सवर्थ की एक कविता पढा रहे थे तो उन्हें कवि की उस भावास्था को समझाने में कुछ कठिनाई अनुभव हुई। तब उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि यदि वे ऐसी अनुभूति का प्रत्यक्ष प्रमाण चाहते हैं तो दक्षिणेश्वर जाकर रामकृष्ण को देख सकते हैं जिन्हें उन्होंने स्वयम् उस अनुपम भावावस्था का आनंद लेते देखा है।

नरेंद्रनाथ कुछ मित्रों के साथ दक्षिणेश्वर गए । अपने ही विचारें में लग्न अपने शरीर और वस्त्रों के प्रति लापरवाह और बाह्यसंसार के प्रति अनमने, नरेंद रामकृष्ण के कमरे में प्रविष्ट हुए । श्री रामकृष्ण को यह देखकर बडा अचरज हुआ कि कलकत्ते के भौतिक वातावरण में ऐसा अध्यात्मिक पुरूष कहाँ से निकल आया। नरेंद्रनाथ ने श्री रामकृष्ण के अनुरोध पर दो बंग्ला गीत गाए । इन गीतों में इतनी आंतरिकता और भक्ति थी कि श्री रामकृष्ण समाधिमग्न हो गए ।

वे बार-बार दक्षिणेश्वर जाने लगे। श्री रामकृष्ण आतुरता से उनकी बाट जोहते रहते। यद्यपि श्री रामकृष्ण के प्रति, नरेंद्र की बडी श्रध्दा थी तथापि उन्होंने उनके तर्क करना नहीं छोडा था। कभी कभी क्षुब्ध होकर वे कहते 'जब तू मेरी बातों पर विश्वास नहीं करता, तो मेरे पास आता क्यों है?' तुरंत नरेंद्र उत्तर देते, 'क्योंकि मैं आपसे प्यार करता हूँ पर इसका ये मतलब नहीं कि बिना सोचे-समझे मैं आपकी बातों को मान लूं।' श्रीरामकृष्ण नरेंद्र की बौध्दिकनिष्ठा से आनन्दित होते।

१८८५ ईस्वीं में श्री रामकृष्ण गले के कैंसर से पीडित हुए । रामकृष्ण जान गए थे, कि उनका कार्य पूरा हो रहा है। एक दिन उन्होंने नरेंद्र को बुलाकर कहा - 'इन युवा भक्तों की देखरेख करने का निर्देश में तुम्हें देता हूँ। मैं तेरे संरक्षण में इन लोगों को छोडता हूँ। देखना मेरे चले जाने के बाद भी वे साधन-भजन करते रहें।'

नरेंद्र जैसे जैसे अध्यात्म की गहराइयों में डूबते गए, उनका मन घर बार से विरक्त होता गया। अंत में उन्होंने समाज और राष्ट्र की सेवा को लेकर ग्रहत्याग किया। कुछ समय बाद रामकृष्ण परमहंस अपनी दैवी शक्ति ओर अपार ज्ञान सौंपकर १६ अगस्त १८८६ को परलोकवासी हुए । रामकृष्ण और नरेंद्रनाथ का मिलन, श्रध्दा का मिलन था, रहस्यवाद और विज्ञानवाद का मिलन था।

१९९१ के अन्त में स्वामीजी ने अपने दो वर्षीय भारत भ्रमण का प्रारंभ किया । इस भ्रमण में उन्होंने भारत की तीव्र दरिद्रता का अनुभव किया । अपने गुरूदेव के 'धर्म भूखे पेट के लिए नहीं है' के वचन की सत्यता उन्हें तीव्रता से अनुभव हुई । यही कारण था कि उन्हें अमेरिका जाने का विचार आया जिससे वे पश्चिम से भारत की भौतिक अवस्था को सुधारने की साधना प्राप्त कर सकें और बदले में उन्हें उनके अध्यात्मिक उन्नयन के लिए वेदान्त का संदेष दे सकें।

स्वामीजी कहते थे, 'अंध विश्वास करना ठीक नहीं, अपने विचारशक्ति, युक्ति काम में लानी होगी । यह प्रत्यक्ष करके देखना होगा कि शास्त्र में जो कुछ लिखा है वह सत्य हैं या नहीं । भौतिक विज्ञान तुम जिस ढंग से सीखना हो ठीक उसी प्रणाली से धर्म विज्ञान भी सीखना होगा । प्रत्यक्ष प्रमाण का निरादर करने से ही कट्टरता, अंधविश्वास और कठमुल्लापन पैदा होता है ।'

स्वामी विवेकानंद ने राजस्थान में शेखावाटी अंचल के खेतड़ी में १९९१ में शास्त्रों का अध्ययन किया था और खेतड़ी नरेष अजीत सिंह ने उनका नाम 'विवेकानंद' रखा था । खेतड़ी नरेश अजीत सिंह के आर्थिक सहयोग से ही स्वामी विवेकानंद अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म सम्मलेन में शामिल होने गए, और वेदांत की पताका फहरा कर भारत को विश्व धर्मगुरू का सम्मान दिलाया था । खेतड़ी पुस्तकालय में उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार, नरेश से माउंट आबू पव्रत पर पहली बार स्वामी विवेकानंद की मुलाकात १४ जून १८९१ को हुई और इस युवा संन्यासी से वह इतने प्रभावित हुए कि उन्हें अपना गुरू बना लिया तथा अपने साथ खेतड़ी चलने का आग्रह किया, जिसे स्वामीजी ठुकरा नहीं पाए, पहली बार स्वामी विवेकानंद ७ अगस्त १८९१ को खेतड़ी आए ।

उन्होंने यहां राजपंडित नारायण दास शास्त्री से 'अष्टध्यायी' तथा 'महाभाष्यधायी' का अध्ययन किया. इसके साथ ही व्याकरणाचार्य और पांडित्म्य के लिए विख्यात नारायण दास शास्त्री को गुरू कह कर संबोधित किया. सोमवार ११ सितम्बर १८९३ को विशाल कोलम्बस हॉल में महासभा का प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ । दोपहर के बाद स्वामीजी को पुकार गया२ अपने भाषण का आरंभ करते हुए स्वामीजी ने सम्बोधन किया, 'अमेरिका निवासी बहनो और भाईयो 'वे इतना ही कह पाए थे कि तालियों की गड़गड़ाहट करते लोग उठ खडे हुए । निश्चित ही वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म महासभा की औपचारिकता छोड़कर एक ऐसी भाषा में बोलना शुरू किया जिसकी लोग प्रतीक्षा कर रहे थे ।

उन्होंने बड़े सुन्दर श्लोकों को प्रस्तुत किया - विभिन्न नदियाँ भिन्न-भिन्न स्त्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार हे प्रभो भिन्न - भिन्न रूचि के अनुसार टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्तें से जाने वाले लोग अन्त में तुझ में ही आकर मिल जाते हैं।

स्वामीजी के व्याख्यान की सार्वजनीनता, मौलिक तत्परता और उदारता ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया । स्वामीजी किसी धर्म के न होकर मानो समग्र भारत और मानवता के प्रतिनिधि थे ।

अपने वेदान्त कार्य को सुदृढ़ करने के लिए फरवरी १८९६ के अंतिम दिनों में उन्होंने सार्वजनिक भाषण देना बन्द कर दिया और एक निश्चित समिति के रूप में वेदान्त आंदोलन को गठित कर अपने उपदेशों को पुस्तक रूप में समिति के माध्यम से प्रकाशित करना प्रारंभ किया । इस प्रकार न्यूयार्क की वेदान्त सोसायटी अस्तित्व में आई । स्वामीजी की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें जैसे राजयोग, भक्तियोग,

कर्मयोग प्रकाशित हुई । उनकी एक शिष्या कुमारी उचर का 'थाउजैन्ड आइलैन्ड पार्क' में बढ़िया निवास स्थान था२ यह पार्क सेन्ट लारेन्स नदी में सबसे बड़ा द्वीप था२ इस स्थान की शांति में ही स्वामीजी ने 'सन्यासी का गीत' नामक अपनी अमर कविता भी लिखी । यही रहते हुए स्वामीजी के मुख से जो प्रेरणा पूर्ण वचन निकले, उसे उनकी शिष्या कुमारी वाल्डों ने Inspired Talks (देववाणी) में संग्रहित किया ।

28 मई 1896 को मैक्समूलर से उनकी भेंट हुई । मैक्समूलर ने स्वामीजी को बताया कि वे रामकृष्ण के जीवन और उपदेशों पर एक बृहत् ग्रंथ लिखना चाहते हैं । स्वामी विवेकानन्द ने अपने पास जो कुछ उपलब्ध था, वह सब प्रो. मैक्समूलर को दिया, बाद में सब, तथ्यों का समायोजन कर उन्होंने ग्रंथ प्रकाशित किया 'Ramkrishna : His Life and Sayings!'

१ मई १८९७ को स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। धीरे - धीरे यह संस्था विकसित हुई । आज सारे विश्व में उसकी शाखाएँ हैं। मिशन की स्थापना के दो वर्ष बाद वे फिर अमेरिका गए और लौटते हुए इग्लैंड, फ्रान्स, ऑस्ट्रिया, ग्रीस, मिस्त्र आदि देशों की भी यात्रा की ।

जीवन को समृध्द बनाने के लिए विवेकानन्द कहते हैं -'अभ्यास अत्यंत आवश्यक है,तुम प्रतिदिन घंटों मेरे पास बैठकर मेरी बात सुन सकते हो लेकिन यदि तुम स्वयम् अभ्यास नहीं करोगे तो एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते। '

अपने जीवन के अंतिम दो वर्षों में वे अधिकांशतः बेलूर मठ में रहे। सोलह वर्षो तक लगातार देश - विदेश का भ्रमण कर भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का सन्देश घर-घर पहुंचाया। अधिक परिश्रम का प्रभाव उनके शरीर पर पड़ा, वे अस्वस्थ रहने लगे। ०४ जुलाई १९०२ को वे पूजाघर में गए और तीन घन्टे ध्यान में बिताए । दोपहर में सब शिष्यों के साथ भोजन किया। संध्या समय फिर अपने कमरे में एक घन्टे ध्यान किया। फिर वे बिस्तर पर लेट गए । जपमाला अब भी उनके हाथ में थी। एक घन्टे बाद उन्होंने करवट बदली और निस्तब्ध हो गये। तब स्वामीजी की आयु मात्र ३९ वर्ष की थी। उन्होंने अपनी ही भविष्यवाणी सार्थक और सिध्द कर दी। उन्होंने कहा था, "मै अपने चालीस वर्ष पूरे देखने के लिए जीवित नहीं रहूंगा। स्वामी विवेकानन्द के सन्दर्भ में राष्ट्र कवि दिनकर लिखते हैं - अभिनव भारत को जो कुछ कहना था, वह विवेकानन्द के मुख से उद्गीर्ण हुआ। अभिनव भारत को जिस दिशा की ओर जाना था, उसका स्पष्ट संकेत विवेकानन्द वह सेतु है जिस पर प्राचीन और नवीन भारत परस्पर आलिंगन करते हैं, विवेकानन्द वह समुद्र है जिसमें धर्म और राजनीति, राष्ट्रीयता और अन्तरराष्ट्रीय तथा उपनिषद और विज्ञान सब के सब समाहित होते हैं।

विश्वकल्याण के लिए स्वामीजी ने समता, स्वातंत्र्य और विश्व बंधुत्व के संबंध में जो विचार प्रस्तुत किय हैं, वे आधुनिक युग में सर्वत्र कार्यान्वित हो रहे हैं । स्वामीजी की विचारधारा आज विश्व के लिए उर्जा का अखंड स्त्रोत है । विवेकानन्द का धर्मप्राण जीवन धर्म में विज्ञान और जीवन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का नया विज्ञान हमारे सामने रखता है ।

सारांश : -

स्वामी विवेकानंद के विचारानुसार राष्ट्रीयता का आधार धर्म व संस्कृति है । अपने हिन्दुत्व को भारत की राष्ट्रीय पहचान के रूप में प्रतिष्ठित किया था । १७ सितम्बर १८९३को शिकागो में धर्म सभा में आपने भारत को हिन्दू राष्ट्र के नाम से महिमा मंडित किया था । शिकागो से वापसी पर कहा था कि सोया देश अब जाग उठा है । अपने पूर्व गौरव को प्राप्त करने के लिए इसे अब कोई नहीं रोक सकता। आपने सभी हिन्दुओं को सब भेदों से उपर उठकर अपनी राष्ट्रीय पहचान पर गर्व करना सिखाया था । आपने लाहौर में हिन्दुत्व के सामान्य आधार पर अपना व्याख्यान दिया था ।

भारत वर्ष के सन्दर्भ में आपने यथार्थ दर्शाते हुए कहा था कि भारत भूमि पवित्र भूमि है। भारत मेरा तीर्थ है२ भारत मेरा सर्वस्व है। भारत की पुण्य भूमि का अतीत गौरवमय है। यही वह भारत वर्ष है जहॉ मानव, प्रकृति, एवं अंतर्जगत की रहस्यों की जिज्ञासाओं के अंकुर पनपे थे। चिंतन मनन कर राष्ट्रीय चेतना जागृत करो। लेकिन आध्यात्मिकता का आधार मत छोडो। आपका स्पष्ट मत था कि पाश्चात्य जगत का अमृत भी हमारे लिए विष हो सकता है।

उपनिशद् ज्ञान के भण्डार हैं। उसका अनुसरण कर अपनी निज पहचान राष्ट्र का अभिमान स्थापित करो। १८९६ की विदेश यात्रा के बाद विवेकानन्द ने पूरे देश का दौरा किया था। स्वामीजी ने कन्याकुमारी में देश के युवाओं को सिंहत्व जगाने का चुनौती पूर्ण संकल्प लिया था। आपने बार-बार कहा था कि भारत के पतन का कारण धर्म नहीं हैं। अपितु धर्म के मार्ग से दूर जाने के कारण ही भारत का पतन हुआ है। अपितु धर्म के मार्ग से दूर जाने के कारण ही भारत का पतन हुआ है। जब-जब हम धर्म को भूल गये तभी हमारा पतन हुआ है और धर्म के जागरण से ही हम पुनः नवोत्थान की

ओर बढ़े हैं। स्वामीजी का मानना था कि मातृभूमि की सेवा के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। तीस वर्ष की आयु में विश्व धर्म सभा में भारतीय ज्ञान एवं गौरव का ध्वज विवेकानंद जी ने फहराया था। २५ वर्ष की आयु में नरेन्द्र ने गेरूवे वस्त्र धारण करके संपूर्ण भारत वर्ष की पैदल यात्रा की थी। शिकागो में विश्व धर्म संसद का आयोजन किया गया था। जिसका मूल उद्देश्य ईसाई धर्म को श्रेष्ठ बतलाना था। आपने विचारों से अमेरिका में तहलका मचा दिया था। वहॉ के मीडिया ने आपको साइक्लोनिक हिन्दू का नाम दिया था। अध्यात्म विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जायेगा कहकर स्वामीजी ने पुनः भारत को गुरूपद पर प्रतिष्ठित कर दिया था। गुरूदेव रविंद्र नाम टैगोर ने कहा था। उसमें सब कुछ सकारात्मक पायेंगे, नकारात्मक नहीं। सब उनमें अपने नेता का दिग्दर्शन करते हैं। वे ईश्वर के प्रतिनिधि थे। सब पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेना ही उनकी विशिष्टता थे। स्वामी विवेकानन्दजी केवल एक संत ही नहीं थे। एक महान देश भक्त थे। वक्ता थे, विचारक थे, लेखक थे, मानवता प्रेमी भी थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में आपने देशवासियों को आहवान किया था। गॉधीजी ने स्वामीजी के ग्रंथ बड़े ही मनोवेग से पढ़े थे। फल स्वरूप देश के प्रति उनका प्रेम हजारों गुना बढ़ गया था। नेताजी ने कहा था कि स्वामी विवेकानन्द जी का धर्म राष्ट्रीयता को उत्तेजना देनेवाला धर्म था। आपके विचारों से देश भक्ति और राजनैतिक मानसिकता उत्पन्न हो गई थी। जवाहरलाल नेहरू ने भी आपकी प्रशंसा की थी। उनका कहना था। उठो, जोगो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ। अपने मानव जन्म को सफल करो। ४ जुलाई सन् १९०२ को शुक्ल यजुर्वेद की व्याख्या की थी। इस प्रकार से विवेकानंदजी की विचारधारा का समाजशास्त्र तथा इतिहास पर प्रभाव दिखाई देता है।

संदर्भ :-

१.विवेकानन्द साहित्य खंड
२.शिक्षा - स्वामी विवेकानंद
३.स्वामी विवेकानन्द व्यक्ति और विचार - राजेंद्र प्रकाश गुप्त
४.भारतीय राजनीतिक चिन्तक स्वामी विवेकानन्द - मनोजकुमार सिंह